

डॉ. मे यंग, इजरायल के प्राचीन निकट पूर्वी पड़ोसियों के विलाप की तुलना, सत्र 2

यह डॉ. मे यंग हैं, जो इजरायल के प्राचीन निकट पूर्वी पड़ोसियों के विलापों की तुलना करने पर अपने शिक्षण में हैं, सत्र 2।

आपका फिर से स्वागत है। तो इस व्याख्यान में और इस बार, मैं इजरायल के प्राचीन निकट पूर्वी पड़ोसियों के विलापों के बीच तुलना के बारे में बात करना चाहूँगा।

तो यहाँ, विलापों की तुलना करते हुए, इज़राइल के आस-पास की पड़ोसी संस्कृतियों पर नज़र डालते हुए, और देखते हुए कि बाइबल में हमें किस तरह के अंतर मिल सकते हैं। तो कुछ समानताएँ क्या हैं, जिनमें से कुछ को मैं इंगित करूँगा, कुछ अंतर क्या हैं, और अंत में, यहाँ अंत में, मैं बस संक्षेप में बताऊँगा कि हम विभिन्न संस्कृतियों में क्या पाते हैं और कुछ समानताओं और अंतरों पर बात करूँगा। लेकिन अंत में, मैं यह भी बताने जा रहा हूँ कि हम वास्तव में इन तरह की तुलनाओं से क्या सीख सकते हैं।

और इसलिए, जब हम इसके बारे में सोचेंगे तो मैं अंत में ऐसा करूँगा। तो जब हम इज़राइल के प्राचीन निकट पूर्वी पड़ोसियों के बारे में सोच रहे हैं, तो हम आज किस पर ध्यान केंद्रित करने जा रहे हैं? तो हम यहाँ पर नज़र डालने जा रहे हैं, हम मिस्र पर नज़र डालेंगे। हम कनानी और मेसोपोटामिया पर भी नज़र डालेंगे।

लेकिन जब हम इस बारे में सोचते हैं तो हम पाते हैं कि जब हम विलाप के बारे में सोचते हैं, तो कई बार, दो मुख्य श्रेणियाँ होती हैं जिनके बारे में हम यहाँ सोचने जा रहे हैं। एक शोकगीत है। यह एक तरह का तरीका है जिससे लोग अंतिम संस्कार के लिए विलाप करना पसंद करते हैं।

इसलिए, जहाँ लोग मृत्यु के कारण शोक मना रहे हैं, यहाँ उस पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। यह उन प्रार्थनाओं के चरित्र के संदर्भ में अधिक होगा जो हमें भजन संहिता की पुस्तक में मिलती हैं, जो देवता से प्रार्थना करने से अधिक संबंधित हैं।

तो यहाँ मेरी जाँच यह देखने के लिए थी कि, आप जानते हैं, क्या ये प्राचीन इज़राइल के आस-पास की संस्कृति में जाने जाते हैं? क्या वे, आप जानते हैं, अपने देवताओं से मदद माँगने के लिए प्रार्थनाएँ लाते हैं? और हम इन प्राचीन निकट पूर्व के उदाहरणों से क्या सीख सकते हैं? और क्या ऐसा कुछ खास है जो हमें बाइबल के उदाहरणों में मिलता है जो बाइबल के विलापों से अलग है? और यह हमारे लिए इस तरह से कैसे शिक्षाप्रद हो सकता है? तो हम सबसे पहले मिस्र के उदाहरणों और मिस्र के पाठों को देखेंगे। फिर हम कुछ कनानी उदाहरणों को देखेंगे, या आप जानते हैं, हम यहाँ क्या पाते हैं? कुछ समानताएँ और अंतर कहाँ हैं? हम कुछ को देखने जा रहे हैं, आप जानते हैं, उगरिटिक के साथ-साथ हिती के बारे में सोचते हुए, और फिर यहाँ मेसोपोटामिया, जो कि सुमेरियन के साथ-साथ बेबीलोनियन से भी निपट रहा है, जैसा कि हम उन

प्रकार के ग्रंथों के बारे में सोचते हैं। तो, फिर से, यह सिर्फ एक संक्षिप्त व्याख्यान है, जिसमें कुछ चीजों की कुछ सामान्यताओं के बारे में बात की गई है, जिन्हें हम कुछ विशिष्ट ग्रंथों में देखेंगे, लेकिन हम उन चीजों पर गौर करेंगे, जिन्हें हम यहां मुख्य रूप से पाते हैं।

जब हम यहाँ मिस्र के पाठ को देखते हैं, तो हम यह जानना चाहते हैं कि पुराने साम्राज्य और मध्य साम्राज्य काल से संबंधित बहुत सारे भजन और प्रार्थनाएँ नहीं हैं। इसलिए आप यहाँ काल देख सकते हैं। इसलिए बाइबल के उदाहरणों के समानांतर हम जो पा सकते हैं, उसके संदर्भ में बहुत सारे नहीं थे।

लेकिन जब हम नए साम्राज्य की बात करते हैं, तो हमारे पास वास्तव में अधिक तुलनीय या तुलनात्मक ग्रंथ होते हैं, लेकिन जरूरी नहीं कि वे वैसा ही हों जैसा हम धर्मग्रंथों में पाते हैं। वे उन विलापों की तरह नहीं हैं जो हमें बाइबल में मिलते हैं। लेकिन ऐसी चीजें हैं जिन्हें हम तत्वों के संदर्भ में देख सकते हैं जो हमारे लिए शिक्षाप्रद हो सकती हैं जब हम सोचते हैं कि ये मिस्र के ग्रंथ किस तरह से उनके देवताओं और उनकी प्रार्थनाओं और उनकी प्रार्थनाओं और माँगों के साथ उनके संबंधों को दर्शाते हैं।

और इसलिए यहाँ हम पाते हैं कि 18वें राजवंश में भी, प्रार्थनाएँ ज़्यादातर भजन ही होती हैं। इसलिए, वे अत्यधिक या वर्णनात्मक प्रशंसा द्वारा चिह्नित हैं। इसलिए यहाँ यह बहुत दिलचस्प है।

इसलिए इन उदाहरणों में कोई विलाप या याचिका या घोषणात्मक प्रशंसा या धन्यवाद नहीं है या जब हम ऐसा देखते हैं तो बहुत ज़्यादा नहीं है। और यह वास्तव में बहुत शिक्षाप्रद या बहुत दिलचस्प है। और मैं इसे थोड़ी देर बाद भी बताऊँगा।

लेकिन पुराने नियम के विद्वान जॉन वाल्टन ने देखा कि मिस्र की प्रार्थनाएँ प्रशंसा से भरी होती हैं, लेकिन उनमें घोषणात्मक प्रशंसा या धन्यवाद नहीं होता। इसलिए, ईश्वर की स्तुति करने वाले भजनों की संख्या बहुत ज़्यादा है, आप जानते हैं, उनकी प्रकृति और सामान्यताओं के बारे में ज़्यादा जानकारी है, लेकिन जरूरी नहीं कि प्रार्थना करने वाले व्यक्ति की ओर से किए गए विशिष्ट व्यक्तिगत कार्य हों, जो कि आप यहाँ शास्त्रों में पाते हैं। कई बार लोग भजन संहिता की पुस्तक में घोषणात्मक प्रशंसा में विलाप और धन्यवाद को भी एक साथ जोड़ देते हैं।

इसलिए, हालांकि, वह जल्दी से यह इंगित करता है कि इसका मतलब यह नहीं है कि उनके पास धन्यवाद प्रार्थनाएँ नहीं थीं, केवल इतना है कि यह मंदिर में उनकी पूजा का हिस्सा नहीं था और वे अपने देवताओं की अधिक व्यक्तिगत स्तर पर प्रशंसा कर सकते थे। लेकिन इसे आधिकारिक मंदिर पूजा के हिस्से के रूप में दर्ज नहीं किया गया था। और इसलिए यह कुछ ऐसा है जिसे हमें भी ध्यान में रखना चाहिए, जब हम इसके बारे में सोचते हैं।

लेकिन उनके दर्ज उदाहरणों में, हमें यहाँ इसके बारे में ज़्यादा कुछ नहीं मिलता। और इसलिए यहाँ 19वें राजवंश में, हमारे पास कुछ उदाहरण हैं जो दिखाते हैं कि ये प्रार्थनाएँ अभी भी प्रशंसा के भजन हैं, लेकिन उनमें अब थोड़ी ज़्यादा याचिकाएँ शामिल हैं। तो आपने पहले के पाठ में देखा होगा कि उनमें देवताओं के लिए उतनी याचिकाएँ नहीं थीं।

लेकिन फिर भी, वे अभी भी उन प्रार्थनाओं से अलग हैं जो हम शास्त्रों में विलाप करते हैं। और इसलिए यहाँ अंतर यह है कि, मैं यहाँ बताना चाहता हूँ कि सबसे पहले वे व्यापक प्रशंसा और आशीर्वाद के साथ शुरू होते हैं। इसलिए, यहाँ देवताओं की बहुत प्रशंसा की गई है।

और इसलिए विद्वान अतमार अकील बताते हैं कि मिस्र के लोग देवताओं से सीधे अनुरोध करने के लिए बहुत कम आते थे। इसलिए, वे सिर्फ अनुरोध करने नहीं आते। वे आमतौर पर प्रशंसा और आशीर्वाद और यहां तक कि याचिका और अंततः इरादे के साथ आते थे।

हालाँकि याचिका उनका अंतिम इरादा था, लेकिन वे बाद में आए। इसलिए, वे अंत में यह समझाने आए कि पिछली सभी प्रशंसाएँ क्यों ज़रूरी थीं। इसलिए, जब मैं इस पर चर्चा करता हूँ, तो मैं इसकी तुलना, आप जानते हैं, जब आपके बच्चे आपके पास आते हैं और कहते हैं, वाह, आप आज बहुत सुंदर दिख रहे हैं या, आप जानते हैं, आप वास्तव में अच्छे दिख रहे हैं।

और उसके पीछे, उनके पास एक अनुरोध है। और इसलिए यहाँ यह एक तरह से चापलूसी है, आप जानते हैं, व्यक्ति या, आप जानते हैं, एक माता-पिता या ऐसा कुछ जो अंतिम इरादे को लाने के लिए है, जो अनुरोध है। और इसलिए आप इस तरह के अनुरोधों में बहुत बार देख सकते हैं जो हम इस में भी देखते हैं।

इसलिए, पाप की स्वीकृति और देवताओं से दया मांगने के अर्थ में भी अंतर है, जो आम नहीं है। इसलिए यह यहाँ दिलचस्प है, खासकर मिस्र के लेखन में। इसलिए, अगर पाप है, तो प्रार्थना करने वाला व्यक्ति अपने व्यक्तिगत दोषों को पाप के बजाय अज्ञानता का परिणाम बताता है।

इसलिए, मिस्र के साहित्य में, ईश्वरीय दया की तलाश करने या क्षमा मांगने की बहुत कम प्रवृत्ति है क्योंकि सामान्य दृष्टिकोण आम तौर पर पाप करने से पूरी तरह इनकार करना था, जो इस तरह से यहाँ दिलचस्प है। जैसे, आप जानते हैं, हम शास्त्रों में पाते हैं कि, आप जानते हैं, भजनकार आकर पाप स्वीकार करेगा या इस तरह से स्वतंत्र रूप से स्वीकार करेगा। लेकिन यहाँ आपको ऐसा ज़्यादा नहीं मिलता।

और शायद यह इस बात से संबंधित है कि वे दुनिया को किस तरह से देखते थे और सांस्कृतिक रूप से। तो, यहाँ सांस्कृतिक पहलू की तरह और यह यहाँ उनके विश्वदृष्टिकोण का संदर्भ है। तो हम पाते हैं कि मिस्र के धर्म में, वे मात या न्याय के इस सिद्धांत पर जोर देते हैं।

और इसलिए इस अवधारणा ने दुनिया को कार्य और परिणाम के विश्वास के माध्यम से एक साथ रखा, जिसे प्रतिशोध सिद्धांत के रूप में भी जाना जाता है। इसलिए, जब आप प्रतिशोध सिद्धांत के बारे में सोचते हैं, तो यह मूल रूप से है कि यदि आप अच्छा करते हैं, तो आपको अच्छा ही मिलेगा। यदि आप बुरा करते हैं, तो आपके साथ बुरा ही होगा।

और इसलिए यहाँ इस तरह का कार्य और परिणाम हो रहा है। और इसलिए यहाँ यह उनके विश्वदृष्टिकोण को आकार दे रहा है और वे दुनिया को कैसे देखते हैं। और इसलिए अगर मात या न्याय की उनकी समझ उस तरह से काम नहीं करती है जैसा कि उसे करना चाहिए, तो अराजकता ही शासन करती है।

और इसलिए यहाँ और भी खास तौर पर, जब हम न्याय और मात के बारे में सोचते हैं और ब्रह्मांडीय व्यवस्था, साथ ही सत्य और संतुलन के बारे में सोचते हैं, तो यहाँ इसी बारे में सोचा जाता है। तो यहाँ, अगर यह काम नहीं करता है, तो आपके पास अराजकता होगी जो आने वाली है। इसलिए, मिस्त्रियों के लिए गलत स्वीकार करना उनके विश्वदृष्टिकोण के संतुलन को बिगाड़ देगा, यहाँ की दुनिया के बारे में।

और किसी के अपराध की घोषणा करना अराजकता में योगदान को भी स्वीकार करना था, और जिसके हानिकारक परिणाम होंगे, विशेष रूप से परलोक में और जिस तरह से वे यहाँ पर परलोक को देखते हैं। और इसलिए यहाँ, उन्होंने किस तरह से योगदान दिया? आप जानते हैं, उनकी समझ के लिए भी, आप जानते हैं, परलोक में उनके दिल को एक पंख के बगल में तौला जाता है, देखने में, आप जानते हैं, यहाँ, आप जानते हैं, न्याय या इस तरह से अराजकता में योगदान के मामले में उनका प्रदर्शन कैसा रहा? तो ये अंतर हैं। लेकिन आप यह भी देखना चाहते हैं कि कुछ समानताएँ हैं जो इस तरह की तुलनाओं से भी सामने आती हैं।

तो, उनमें से एक यहाँ पहचान रहा है कि, आप जानते हैं, वे यहाँ किससे प्रार्थना कर रहे हैं। तो यहाँ, सूर्य देवता, अमुन-रे, वे वास्तव में उन्हें एक ऐसे देवता के रूप में देख रहे हैं जो मात की गारंटी देता है। तो यहाँ, यह वह जगह है जहाँ देवता वास्तव में दुनिया में न्याय की गारंटी दे रहे हैं।

और इसलिए यहाँ, लोग वास्तव में न्याय के लिए भगवान के पास आ सकते हैं। वे वास्तव में आकर याचिका कर सकते हैं क्योंकि वह इस तरह से इसका गारंटर है। और फिर फिरौन, फिर, यहाँ सांसारिक क्षेत्र के संदर्भ में न्याय का गारंटर है।

और इसलिए, उसके किसी भी दुश्मन को उस अर्थ में अराजकता या इस्फ़ेट का प्रतिनिधित्व करने के रूप में देखा जाता है। तो यहाँ, फिरौन के खिलाफ़ जाने वाला कोई भी व्यक्ति उस तरह की समझ में देवताओं के खिलाफ़ जा रहा है। इसलिए हम देखते हैं कि यहाँ हमारे पास जो कुछ भी है उसमें यह भी परिलक्षित होता है।

इसलिए जहाँ इस्राएलियों की समझ है कि वे कई बार यहोवा से प्रार्थना करने आ सकते हैं क्योंकि यहोवा ही न्याय करने वाला है, आप जानते हैं, न्याय भी उसी के हाथ में है। और भजनकार परमेश्वर से दुश्मनों के खिलाफ़ कार्य करने के लिए कह सकता है, क्योंकि वे अंततः उसके खिलाफ़ हैं, उसके खिलाफ़ काम कर रहे हैं और उस अर्थ में दुश्मनों के खिलाफ़ आ रहे हैं। और इसलिए उस अर्थ में भी इसे उसी तरह से देखने की एक तरह की मानसिकता है।

तो यह कुछ हद तक एक संक्षिप्त चर्चा है जो कुछ समानताओं और उन तरीकों पर आधारित है जो हम मिस्र के तरीकों में देखते हैं। मेरे साथ दूसरी श्रेणी, यहाँ कनानी और विशेष रूप से उगरिटिक प्रकार के उदाहरण हैं। तो ये उगरिट या आधुनिक सीरिया में उगरिट के कांस्य युग के अंत के स्थल से खोजों पर आधारित हैं।

और इसलिए आपने जो पाया, वह यह कि बहुत बार पाठ प्रशासनिक पाठ या सूचियाँ अधिक थीं। इसलिए वे जरूरी नहीं कि विलाप भजनों में जो हम पाते हैं, उससे तुलनीय हों। भजनों सहित पुराने नियम के पाठ में कुछ समानताएँ थीं।

लेकिन ये ज़्यादातर कथात्मक कविताएँ थीं, न कि भजन या प्रार्थनाएँ, जैसा कि हम इस तरह से करते हैं। इसलिए जैसा कि मैंने यहाँ शोध किया, दो उल्लेखनीय प्रार्थनाएँ थीं, उस पर अधिक विवरण। आप इसे ऑक्सफोर्ड हैंडबुक ऑफ़ द स्तोत्र में पा सकते हैं।

यह इस तरह की व्यापक सूची है, और वे क्या देखते हैं। लेकिन हम यहाँ जो पाते हैं और उनकी समानताएँ यह हैं कि कई बार समानता के उपयोग के साथ एक साझा काव्य शैली होती है। इसलिए, समानता यहाँ हिब्रू कविता के भीतर बहुत व्यापक रूप से पाई जाती है और मूल रूप से यह एक काव्यात्मक उपकरण है जो दोहराव, समानार्थक शब्द और कभी-कभी विलोम द्वारा दो या तीन पंक्तियों के माध्यम से एक विचार व्यक्त करता है।

और इसलिए, आप इसे नीतिवचन की पुस्तक के साथ-साथ भजन संहिता की पुस्तक में भी पा सकते हैं। इसलिए, कई बार समानता, इस तरह की काव्य शैली, इन उगारिटिक ग्रंथों में भी प्रचलित है। उनके विषय भी समान थे।

तो, आप ईश्वरीय राजत्व, शत्रुओं पर विजय, ईश्वरीय सलाह और अधोलोक के बारे में बात करने के लिए दयालु हैं। उनके पास कुछ ऐसे विषय हैं जिन्हें हम भजनों में भी संबोधित देख सकते हैं। इसलिए, जॉन हेस्टिंग्स पैटन ने देखा कि कुछ साझा शब्दावली भी है।

और इसलिए यहाँ उन्होंने प्रतिशत की सूची बनाई है जिसे हम यहाँ देख सकते हैं, लेकिन यह भी ध्यान दें कि कभी-कभी विशिष्ट वर्तनी या संक्षिप्त रूप होते हैं जो यहाँ अलग होते हैं। और इसलिए यहाँ आपके पास एक साझा शब्दावली, साझा शैली, साझा विषय हैं। उनमें से बहुत सी चीजें यहाँ मौजूद हैं जो बाइबल के पाठ में भी समानता के रूप में पाई जाती हैं।

यहाँ भी कुछ अंतर हैं। और इसलिए यहाँ, मार्क स्मिथ ने उल्लेख किया कि उगारिटिक ग्रंथों में विषय कभी-कभी मृतकों के प्रति उनकी भक्ति के अर्थ में नहीं पाए जाते थे। और इसलिए यह उगारिटिक ग्रंथों के लिए एक प्रचलित विषय था।

लेकिन हमें बाइबल के ग्रंथों में यह बात नहीं मिलती। भजन संहिता में इस्राएली देवता को जीवितों के देवता और जीवित देवता के रूप में दर्शाया गया है। इसलिए यह थोड़ा अलग है कि इसे कैसे चित्रित किया जाता है।

तो समानताओं में भी अंतर हैं। एक और उल्लेखनीय अंतर है, और वह यह है कि ये ग्रंथ बाल देवता से संबंधित हैं, और वे एक तरह की पौराणिक कल्पना पर अधिक जोर देते हैं। हम भजन संहिता की पुस्तक में कुछ ऐसा ही पाते हैं।

आप जानते हैं, ईश्वर की तरह, आप जानते हैं, बादलों को लिखते हैं या, आप जानते हैं, हमारे पास इसके भीतर कुछ पौराणिक तत्व हैं। लेकिन निश्चित रूप से, वे इन अन्य ग्रंथों में भी अधिक

पौराणिक तत्व के रूप में मौजूद हैं। इसलिए, यहाँ, विद्वानों ने यह भी उजागर किया है कि यहाँ की शैली, जैसा कि हमने अपनी पिछली बात में शैली के बारे में बात की थी, वे बाइबिल की तरह नहीं हैं।

और इसलिए उनके पास ऐसी कविताएँ हैं जो एक मिश्रण हैं जो अलग हैं। और इसलिए उनके पास वर्णनात्मक प्रशंसा है, देवता को आशीर्वाद देना है। उनके पास विलाप और प्रतिज्ञाएँ, शिकायतें हैं।

और फिर उन्हें उसी तरह वर्गीकृत नहीं किया गया है जैसा कि हम बाइबिल के ग्रंथों में पाते हैं। इसलिए आपको एक-से-एक तुलना नहीं मिलेगी। लेकिन उनमें, आप जानते हैं, कुछ समानताएँ हैं, लेकिन यहाँ कुछ अंतर भी हैं।

विलियम हॉलो का मानना है कि इन सभी अध्ययनों में उद्धृत उगारिटिक ग्रंथ न तो भजन हैं और न ही प्रार्थनाएँ, और इस प्रकार वे केवल बाइबिल के भजन की श्रेणी को ही स्पष्ट करने के लिए अप्रत्यक्ष रूप से काम कर सकते हैं। और इसलिए यहाँ, एक ही बात सोचते हुए, आप जानते हैं, हम एक-से-एक तुलना नहीं करने जा रहे हैं, लेकिन हम वास्तव में यहाँ जो कुछ भी है, उस पर एक नज़र डाल सकते हैं। अंत में, इज़राइल के ग्रंथों और उसके प्राचीन निकट पूर्व पड़ोसियों के बीच सबसे स्पष्ट अंतरों में से एक शास्त्र के एकेश्वरवादी विश्वदृष्टिकोण के विपरीत एक बहुदेववादी विश्वदृष्टिकोण में विश्वास है।

तो, उनके पड़ोसी वास्तव में बहुत से देवताओं में विश्वास करते थे और देवता इस तरह से कैसे काम करते थे। और हम थोड़ा और देखेंगे कि उनमें से कुछ ने वास्तव में कितने देवताओं से इस तरह से प्रार्थना की। और इसलिए अब हम कनानी उदाहरणों की ओर बढ़ते हैं, हिती उदाहरणों की ओर, इसलिए उगारिट से आगे बढ़ते हुए हिती उदाहरणों की ओर बढ़ते हैं।

तो यहाँ, आधुनिक तुर्की में हिती साम्राज्य एक तरह से वह जगह है जहाँ हम बात कर रहे हैं, जो दर्शाता है कि पुराने नियम के विलाप के भजनों के समान कई उदाहरण नहीं थे। लेकिन हम यहाँ कुछ समानताएँ या कुछ अंतर पाते हैं जो हम देख सकते हैं। तो, पुराने साम्राज्य की प्रार्थनाएँ, लगभग 17वीं शताब्दी ईसा पूर्व, प्रकृति में अधिक सामान्य थीं और वे किसी विशिष्ट व्यक्ति की प्रतिक्रिया में या यहाँ तक कि विशिष्ट व्यक्तियों से जुड़ी हुई नहीं थीं।

इसलिए, पहले की प्रार्थनाएँ निश्चित रूप से अधिक सामान्य प्रकृति की थीं, और यहाँ जो प्रार्थनाएँ या ग्रंथ पाए गए, वे भी सामान्य थे। और फिर, नए साम्राज्य के कुछ समय बाद, कई शाही प्रार्थनाएँ लिखी गईं। और इसलिए यहाँ, इन्हें विशिष्ट लोगों के लिए अधिक विशिष्ट रूप से पहचाना जाता है।

इसलिए, उन्होंने विशिष्ट राजाओं या शाही परिवार के सदस्यों का नाम लिया जो अपने लिए या अपने राज्य की ओर से ये प्रार्थनाएँ पढ़ते थे, आमतौर पर विभिन्न देवताओं या परिस्थितियों से मदद माँगते हुए, दुश्मनों, विपत्तियों, बीमारियों से मुक्ति के लिए सहायता माँगते हुए। तो वे निश्चित रूप से देवता के लिए एक तरह की प्रार्थना हैं जो इन ग्रंथों में इस तरह से बहुत अधिक पाई जाती

है। इसलिए, अन्य प्राचीन निकट पूर्वी पड़ोसियों की तरह, हित्तियों ने देवताओं के एक समूह की पूजा की।

और इसलिए, यहाँ एक उदाहरण है कि आप यहाँ मुवाताली द्वारा की गई एक प्रार्थना देख सकते हैं, दूसरे में 83 अलग-अलग इलाकों के 140 देवताओं का आह्वान किया गया। इसलिए, हम एक बहुदेववादी विश्वदृष्टि के बारे में बात कर रहे हैं जिसमें बहुत सारे देवताओं को ध्यान में रखा गया है, जो कि हम जो पाते हैं, उससे बहुत अलग है, आप जानते हैं, इज़राइली संस्कृति में, बाइबिल और धर्मग्रंथों में, जो वहाँ परिलक्षित होता है, केवल उस अर्थ में याहवे को देखते हुए। इसलिए यहाँ मैं कुछ अंतरों के बारे में बात करना चाहता हूँ और फिर एक विशिष्ट उदाहरण को देखना चाहता हूँ जिसका उल्लेख विद्वानों द्वारा किया गया था, और इसमें कुछ अंतरों और समानताओं को देखना चाहता हूँ।

तो, इन हित्ती प्रार्थनाओं में सबसे उल्लेखनीय अंतर उनके देवताओं से संबंधित लेन-देन संबंधी विश्वदृष्टिकोण से संबंधित है। तो यह बहुत लेन-देन संबंधी है। मूल रूप से, आप जानते हैं, आप मेरी पीठ खुजलाओ और मैं आपकी पीठ खुजलाऊंगा और, आप जानते हैं, मैं आपके लिए यह करूंगा।

आप मेरे लिए यह करें। और इसलिए, मैं यहाँ यही लेकर आया हूँ। और इसलिए ग्विला टोरी ने देखा कि मुर्सिली द्वितीय की पहली प्लेग प्रार्थना में यह लेन-देन का दृष्टिकोण है, उसने इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे प्रार्थनाओं में सूर्य देवी, एरेना को रोटी और शराब या पेय प्रसाद के साथ पुरस्कृत करने का वादा किया गया था, अगर वह प्लेग को खत्म कर देती है।

तो मूल रूप से यहाँ, आप जानते हैं, देवताओं के साथ सौदेबाजी या व्यवहार करना एक तरह की बात है। इसके अतिरिक्त, हेस का सुझाव है कि हित्ती प्रार्थनाएँ वस्तुतः देवताओं को मनाने के लिए तर्क या रणनीतियाँ थीं। और इसलिए यहाँ प्रार्थना के लिए हित्ती शब्द व्युत्पत्तिगत रूप से अंग्रेजी शब्द "तर्क" से संबंधित है।

तो एकार। और इसलिए, प्रार्थना के लिए हिब्रू शब्दों में से एक, तेफिला, में भी इसी तरह के न्यायिक संघ हैं। और इसलिए यहाँ इस बारे में सोचना एक तरह का तर्क है, देवताओं को इस तरह से कार्य करने के लिए एक तरह का अनुनय।

और इसलिए यहाँ, जबकि कुछ शब्दावली पुराने नियम के भजनों में सामान्य रूप से मौजूद हो सकती है, यहाँ हम जो पाते हैं वह बाइबिल में जो है उससे बहुत अलग मानसिकता है। यह पवित्रशास्त्र में जो हम पाते हैं, वह लेन-देन की मानसिकता नहीं है। यह ऐसा नहीं है कि, आप मेरी पीठ खुजलाओ, मैं आपकी पीठ खुजलाऊँ।

वास्तव में, आप जानते हैं, मीका 6, 8 में भविष्यवक्ताओं में भी, जिसे मैंने यहाँ प्रस्तुत किया है, यह वास्तव में इस विपरीत तस्वीर को प्रस्तुत करता है। इसलिए, आप जानते हैं, इस्राएली इस मानसिकता के साथ आते रहे, यहाँ तक कि वे उन बलिदानों के प्रकार तक बढ़ गए जो उन्हें लगता था कि प्रभु चाहते थे, और जो परमेश्वर चाहता था वह वास्तव में अपने लोगों के साथ एक

रिश्ते की इच्छा थी और उनके लिए धार्मिकता, विनम्रता और न्याय में चलना था। और इसलिए यहाँ इन आयतों में, यह कहा गया है, आप जानते हैं, वे उसके बाद आते हैं, आप जानते हैं, पैगंबर ने उन पर ये सभी अभियोग लगाए हैं।

और फिर वे जवाब में आते हैं और कहते हैं, मैं प्रभु के सामने क्यों आऊँ और महान ईश्वर के सामने क्यों झुकूँ? तो किसके साथ? और इसलिए, क्या मैं उसके सामने होमबलि लेकर, एक वर्ष के बछड़ों के साथ आऊँ? तो यही मानक है। क्या यही भगवान चाहते हैं? क्या वे मानक प्रकार का बलिदान चाहते हैं? क्या हमें पापों और उन चीज़ों से निपटने के लिए यही करना है जो आपने हमारे खिलाफ़ लायी हैं? क्या भगवान एक हज़ार मेढ़ों, 10,000 नदियों के जैतून के तेल से प्रसन्न होंगे? तो वे थोड़ा सा दांव बढ़ा देते हैं। क्या यही वह चाहते हैं? आप जानते हैं, यह इस तरह की चीज़ है, और फिर वे इसे अकल्पनीय तक ले आते हैं।

तो क्या मैं अपने अपराधों के लिए अपने जेठे बच्चे को, अपने शरीर के फल को, अपने प्राण के पाप के लिए बलिदान करूँ? और इसलिए वे फिर से, एक तरह से बहुत ही लेन-देन वाली मानसिकता रखते हैं कि वे कैसे सोचते हैं कि वे हैं, कि परमेश्वर उनके साथ व्यवहार कर रहा है। और यही परमेश्वर भविष्यद्वक्ता से कहता है। वह कहता है, उसने तुम सभी नश्वर या बूढ़े लोगों को दिखाया है, क्या अच्छा है और प्रभु तुमसे क्या चाहता है कि तुम न्यायपूर्ण तरीके से कार्य करो और दया से प्रेम करो और अपने परमेश्वर के साथ विनम्रता से चलो? और इसलिए यहाँ बहुत अलग तरह की मानसिकताएँ हैं जो हम यहाँ पाते हैं, यहाँ तक कि शास्त्रों के साथ भी, यहाँ की कुछ प्रार्थनाओं के विपरीत।

तो, यहाँ विशिष्ट उदाहरणों पर वापस आते हैं। तो, यह रोसिली की देवी-देवताओं की सभा के लिए पहली प्रार्थना है। और इसलिए यहाँ इसकी तुलना विशेष रूप से विद्वान से की गई है, जिसने इसे भजन 88 और 89 के साथ देखा, और निम्नलिखित को देखा।

और इसलिए, यह क्रिस्टोफर हेस है। इसलिए, समानताओं के संदर्भ में, हिती और भजन दोनों ही अंधकार में रहते हैं और अपने अंत तक विलाप करते हैं। ये प्रार्थनाएँ अपने वक्ता को अभी भी ईश्वरीय हस्तक्षेप की प्रतीक्षा में छोड़ देती हैं।

और इसलिए वे अभी भी यहाँ इंतज़ार कर रहे हैं। तो दोनों में ही यह है। हिती प्रार्थना और 89 दोनों में ही एक मजबूत शाही चरित्र है।

तो यहाँ, राजा के साथ, राजा के साथ पहचान करते हुए, जैसा कि हमने पहले देखा, उस बारे में बात करते हुए। उन्होंने देवता से मदद माँगते हुए और देवता के पिछले अनुकूल उपचारों पर विचार करते हुए विषयों को साझा किया है। और इसलिए यहाँ अतीत का एक प्रकार का प्रतिबिंब है, यहाँ अनुकूल उपचार के बारे में सोचना।

लेकिन यहाँ अंतर यह है कि, आप जानते हैं, भजन 88 में, यह प्रकृति में अधिक व्यक्तिगत है और यह हिती प्रार्थना की तुलना में व्यक्तिगत पीड़ा और मृत्यु को संदर्भित करता है जहाँ राजा राष्ट्र की ओर से बोल रहा है और यहाँ तक कि एक मुख्य पुजारी की तरह कार्य करता है। और इसलिए

यहाँ वह राष्ट्र का प्रतिनिधि है, भजन 88 में हम जो व्यक्तिगत प्रकृति पाते हैं, उसके विपरीत। और फिर हिती प्रार्थना में, यह अपराध को दूर करने के लिए वर्तमान पीढ़ी को पिछली पीढ़ी से दूर करने का प्रयास करता है।

तो यह बहुत दिलचस्प बात है। इसलिए वे अपनी पहचान नहीं बताते। वे अपराध स्वीकार नहीं करना चाहते।

वे खुद को अपने पूर्वजों से अलग करना चाहते हैं, जिन्होंने वास्तव में पाप किया है, लेकिन वे इस तरह से निर्दोष हैं। और इसलिए यहाँ, राजा मुर्सुली अपने दुख का श्रेय अपने पिता द्वारा तोड़ी गई प्रतिज्ञा को देते हैं। जबकि पिताओं ने एक अनुष्ठान किया, अपने स्वयं के अपराध की घोषणा की, हट्टी राष्ट्र दोषी बना हुआ है क्योंकि उन्होंने अपनी ओर से कोई अनुष्ठान नहीं किया।

और इसलिए यहाँ वह भूमि की ओर से प्रतिपूर्ति कर रहा है, लेकिन वह यह भी स्पष्ट करता है कि उसने कोई बुरा काम नहीं किया है। तो फिर, इस तरह से पापों को स्वीकार करने से यह दूरी। और इसलिए यह भजन 89 के विपरीत है, जो पिछली पीढ़ियों के साथ संबंध पर जोर देता है।

और पूर्वजों से कोई दूरी नहीं है। ऐसा नहीं है, आप जानते हैं, उन्होंने गलत किया, लेकिन हम ठीक कर रहे हैं। आप जानते हैं, यह यहाँ एक तरह की पहचान है।

इसलिए हिती प्रार्थना के विपरीत, भजन 88 और 89 ईश्वरीय क्रोध का कारण नहीं बताते हैं। दूसरे शब्दों में, भजनकार किसी तरह का प्रतिशोध लेने पर ध्यान केंद्रित नहीं कर रहा है, बल्कि यहोवा से राहत दिलाने की याचना कर रहा है। तो यह फिर से, यहाँ लेन-देन के बारे में नहीं है, बल्कि वास्तव में यहाँ, इस तरह से हो रही उनकी पीड़ा के लिए राहत लाने के बारे में है।

तो यहाँ, फिर आगे बढ़ते हुए, फिर जैसा कि हम इन अंतिम प्रकार के उदाहरणों को देखते हैं, यहाँ अधिक मेसोपोटामिया था। इसलिए इज़राइल के सभी पड़ोसियों, प्राचीन निकट पूर्व पड़ोसियों के बीच, हमारे पास शायद यहाँ प्रार्थनाओं का सबसे बड़ा संग्रह है जिसकी तुलना बाइबिल के विलापों से की जा सकती है, जो सुमेर और बेबीलोनिया से अधिक संबंधित है। और इसलिए यहाँ, मेसोपोटामिया के शुरुआती समय में ये प्रार्थनाएँ, देवताओं के लिए लिखित प्रार्थनाएँ, अक्सर मन्त्र की वस्तुओं पर अंकित की जाती थीं।

तो कई बार, आप जानते हैं, कटोरों पर, हथियारों में, मूर्तियों में। और उन्हें वास्तव में मंदिरों में उस देवता के पास रखा जाता था जिसे वे संबोधित करने की कोशिश कर रहे थे। और इसलिए वे वास्तव में वस्तुओं को लाते थे, और इन वस्तुओं पर, इन प्रार्थनाओं को लिखते थे, किसी तरह से एक प्रॉक्सी के रूप में कार्य करने के लिए।

इसलिए उन्हें लगातार देवता की उपस्थिति में प्रार्थना करने के स्थान पर माना जाता था। इसलिए, आप यह वस्तु ला रहे हैं क्योंकि जो व्यक्ति यह अनुरोध कर रहा है वह दिन-रात वहाँ खड़ा नहीं रह सकता। वे इस अर्थ में देवता की उपस्थिति के सामने खड़े होने के लिए अपनी प्रार्थनाओं के साथ एक वस्तु वहाँ लाते हैं।

और इसलिए जैसे-जैसे समय बीतता गया, आप जानते हैं, ये वस्तुएं बहुत महंगी हो गईं, आप जानते हैं, ये कटोरे और हथियार और ये चीजें यहाँ मिलना मुश्किल हो गया। और इसलिए, आप जानते हैं, प्रार्थना करने वाले व्यक्ति ने ये प्रार्थनाएँ और पत्र लिखना शुरू कर दिया और उनके पास और भी पत्र होने लगे। और उन्होंने उन्हें देवता को लिखा, और उन्होंने उन्हें मंदिर में भी छोड़ दिया।

और इसलिए विद्वानों ने प्रार्थनाओं के नौ अलग-अलग प्रकारों की पहचान की है। और इसलिए मेरी पुस्तक में, आप यहाँ पृष्ठ 43 और 44 पर विभिन्न प्रकार की प्रार्थनाओं के बारे में विस्तृत जानकारी देख सकते हैं, जो आप जानते हैं, पाई गईं और उस तरह से पाई गईं विभिन्न प्रकार की प्रार्थनाएँ, और उन्हें कैसे पहचाना गया है। इसलिए, एक और पहलू जिस पर ध्यान दिया जाना चाहिए वह यह है कि जिस तरह मानव शासक के पास जाने वाले लोग खाली हाथ नहीं आते।

सुमेरियन और बेबीलोन की बहुत सी प्रार्थनाओं के साथ अनुष्ठान भी होते थे। इसलिए वे न केवल प्रार्थनाओं के साथ इन मूर्तियों या चीजों को लाते थे, बल्कि वे वास्तव में देवताओं को प्रसन्न करने के लिए बलि या उपहार भी लाते थे ताकि उनकी प्रार्थनाएँ स्वीकार की जा सकें। और इसलिए यहाँ ये अनुष्ठान देवता को प्रार्थना करने वाले व्यक्ति की प्रार्थना स्वीकार करने के लिए प्रेरित करने के लिए दिए गए थे।

और इसलिए फिर से, एक बहुत ही लेन-देन वाली मानसिकता, भले ही वे इस तरह से देवता के पास जा रहे हों। तो यहाँ, जेसिका मैकमिलन ने ईशर के लिए विलाप की सुमेरियन प्रार्थना की तुलना बाइबिल के विलाप की शैली से की और निम्नलिखित समानताओं और अंतरों को नोट किया। तो आप यहाँ कुछ विशिष्ट उदाहरण देखें।

यहाँ पर, उनमें कुछ समानताएँ हैं और खास बात यह है कि कविता में बाइबिल के विलाप के बहुत समान तत्व हैं। तो हमारे पास उनमें से कुछ तत्व हैं, जैसे, आप जानते हैं, आह्वान, देवता की स्तुति, शिकायत, याचिका। तो आपके पास कुछ ऐसे तत्व हैं जो वहाँ सामान्य हैं।

इसमें समान वाक्यांशों का उपयोग, कितना लंबा, कुछ साझा शैलीगत समानताएं, काव्यात्मक उपकरण और संकेत भी हैं। तो आपके पास कुछ हद तक समान विषय भी हैं। तो आप इस तरह की प्रार्थनाओं में कुछ ऐसा ही देखते हैं।

यहाँ अंतर यह है कि इसमें प्रार्थना की शुरुआत में बहुत प्रशंसा थी। इसलिए यह बाइबिल के विलाप में नहीं पाया जाता है। तो फिर, मिस्र की प्रार्थनाओं की तरह जिसमें शुरुआत में बहुत प्रशंसा होती है, आप यहाँ भी वही पा रहे हैं।

और फिर जब आप बाइबल में पाते हैं, आप जानते हैं, बाइबल के विलाप, विशेष रूप से, आप जानते हैं, व्यक्तिगत विलाप, आप देखते हैं कि भजनकार बस भगवान के पास आता है और बस कहता है, हे भगवान, आप जानते हैं, या मेरी चट्टान। भगवान के पास आना, उनकी प्रशंसा करना और उनकी चापलूसी करना जैसी कोई बात नहीं है। यह बस सीधे भगवान के पास आना और उन्हें इस तरह से संबोधित करना है।

तो, आप इसे बाइबिल के विलापों में या इस तरह की व्यापक प्रार्थना में नहीं पाएंगे जो शुरुआत में पाई जाती है। और इसलिए यहाँ, जबकि मेसोपोटामिया के विलाप आमतौर पर प्रशंसा के साथ शुरू हो सकते हैं, बाइबिल के विलाप आमतौर पर प्रशंसा के साथ समाप्त होते हैं। और फिर हमने यह भी देखा।

तो, वे, आप जानते हैं, इसे इस तरह से भी लाते हैं। और इसलिए यहाँ, एक और बात यह है कि सुमेरियन प्रार्थनाएँ, बहुत बार, प्रार्थना करने वाले व्यक्ति के परिचय से शुरू होती हैं। तो, व्यक्ति खुद को देवताओं से परिचित करा रहा है।

तो, आपके पास यह उदाहरण है, मैं, आप जानते हैं, फलां व्यक्ति हूँ, जिसका भगवान मर्दुक है। और इसलिए, यह किसकी देवी है? तो, यह औपचारिक परिचय बताता है कि वे कौन हैं, वे किस भगवान से जुड़े हैं, और वे इस अर्थ में यहाँ क्यों हैं। यह आत्म- परिचय विभिन्न लोगों के लिए, विभिन्न कारणों, स्थितियों के लिए अनुकूलित किया जा सकता है, और वे इसे नाम दे रहे हैं।

और इसलिए हम यहाँ बाइबिल के पाठ में ऐसा नहीं पाते हैं। आप किसी को यहाँ आकर यह कहते हुए नहीं देखते कि मैं यहाँ हूँ और मेरा प्रतिनिधित्व यह ईश्वर करता है या, आप जानते हैं, ऐसा कुछ भी। यह बस अलग है।

और इसलिए, फिर से, यह दर्पण शासक की उपस्थिति के सामने आता है, जिससे हम संभवतः इसे सबसे अच्छे तरीके से देख सकते हैं या किसी उच्च अधिकारी को जो अदालतों में बैठा है। और यह इस मानव व्यक्ति और देवताओं के बीच इस तरह की दूरी को दर्शाता है। और इसलिए वहाँ एक दूरी है जो इस तरह के परिचय की आवश्यकता में परिलक्षित होती है जिसे आप बाइबिल के भजनों में नहीं पाएंगे, जो यहोवा को एक शरणस्थल और एक ढाल के रूप में बोलते हैं।

इसलिए यह इस बात से बहुत अलग है कि हम किस तरह से सोचते हैं कि भजन संहिता परमेश्वर के समक्ष इस तरह के संचार को चित्रित करती है। इसलिए जॉन वाल्टन ने देखा कि मिस्र और कनानी प्रार्थनाओं की तरह, बेबीलोन की प्रार्थनाएँ भी व्यक्ति की ओर से किए गए विशिष्ट व्यक्तिगत कार्यों के लिए अपने देवताओं की प्रशंसा नहीं करती हैं। तो फिर, यह उनकी प्रशंसा करने के बारे में अधिक है कि वे कौन हैं।

यह धन्यवाद के विशिष्ट कार्य नहीं हैं जैसा कि हम, आप जानते हैं, विलाप की प्रार्थनाओं में पाते हैं और विशिष्ट स्थितियों को सुनने या उनसे निपटने के लिए भगवान को धन्यवाद देते हैं। ये प्रकृति में विशिष्ट नहीं हैं। और इसलिए, फिर यहाँ क्लॉस वेस्टरमैन ने पाया कि बेबीलोन में, बेबीलोन में, भजन मुख्य रूप से उस व्यक्ति की प्रशंसा करते हैं जो मौजूद है, वह ईश्वर जो अपने देवताओं की दुनिया में मौजूद है।

इस्राएल में, वे मुख्य रूप से उस परमेश्वर की स्तुति करते हैं जो अपने लोगों के इतिहास और व्यक्ति तथा उसके लोगों के सदस्यों के इतिहास में हस्तक्षेप करके अद्भुत कार्य करता है। इसलिए, बेबीलोन में स्तुति किए गए देवताओं का इतिहास देवताओं के बीच है। इस्राएल की स्तुति में शुरू से अंत तक, मूल विषय परमेश्वर का अपने लोगों के साथ इतिहास है।

तो फिर, बाइबिल के विलापों, बाइबिल के उदाहरणों में आप एक बहुत ही व्यक्तिगत प्रकृति पाते हैं, आप जानते हैं, देवताओं का देवताओं की दुनिया में व्यवहार करना और मौजूद होना और उसके लिए उनकी प्रशंसा करना, बजाय इसके कि भगवान वास्तव में इस तरह से मनुष्यों के रूप में हमारे साथ बातचीत करते हैं। और इसलिए इसमें भी एक वास्तविक अंतर है। और इसलिए यहाँ, एक और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि, आप जानते हैं, पश्चाताप की प्रार्थनाएँ पश्चाताप की प्रार्थनाएँ हैं क्योंकि वे पाप की पहचान करने और क्रोधित देवताओं को खुश करने के लिए पाप को स्वीकार करने का प्रयास करते हैं।

हालांकि याचिकाकर्ता पश्चाताप के साथ आता है और देवता से पाप और उसके परिणामों से मुक्ति या सुलह की मांग करता है, लेकिन देवता प्रार्थना करने वाले व्यक्ति द्वारा की गई किसी ऐसी कार्रवाई के कारण नाराज है जो प्रार्थना में निर्दिष्ट नहीं है। इसलिए वे यह जानते हुए भी आ रहे हैं कि, आप जानते हैं, उन्होंने कुछ गलत किया है और वे उसे खुश करने की कोशिश कर रहे हैं। यह देवताओं को खुश करने के बारे में है।

आप जानते हैं, हमने क्या गलत किया? हम इसे किस तरह से सुधार सकते हैं? और कई बार यह मंत्रों के माध्यम से किया जाता था, जो बहुत लोकप्रिय भी थे, या अनुष्ठान क्रियाएँ, जैसे कि विशिष्ट निर्देश। उन्हें वास्तव में ऐसे ग्रंथ मिले जो कहते हैं, आप जानते हैं, यह करो और वह करो। इसलिए यह एक व्यवस्थित उदाहरण है कि उन्हें क्या करने की आवश्यकता है।

इसलिए उनके साथ दिशा-निर्देश भी दिए गए हैं, जिसमें ताबीज का इस्तेमाल, घरों पर खून लगाना, वस्तुओं को जलाना, बुराई को दूर करना, आप जानते हैं, ये सभी चीजें शामिल हैं जो दुख का कारण बन रही हैं। इसलिए वे दुख को कम करने की कोशिश कर रहे हैं। और इसलिए ऐसे कई कदम हैं जो उन्हें उठाने की जरूरत है।

और इसलिए बाइबिल के भजन बहुत अलग हैं। वे मंत्र नहीं हैं। उनमें स्पष्ट निर्देश नहीं हैं।

आप जानते हैं, उनके साथ दर्द को कम करने के लिए कोई अनुष्ठान नहीं किया जाता है। आपको ऐसा नहीं मिलेगा। आप जानते हैं, हम कोई ताबीज नहीं पहनेंगे जिससे हमारा दर्द दूर हो जाए या ऐसा कुछ भी।

तो आपको इस अर्थ में भी कुछ ऐसा नहीं मिलेगा जो समान हो। मिस्र की तरह, मेसोपोटामिया की प्रार्थनाओं में भी पाप के संबंध में अज्ञानता का रुख अपनाया गया। इसलिए, हालांकि, इसका कारण अलग है।

तो, जैसा कि हमने बात की, मिस्र की मानसिकता के साथ, आप जानते हैं, यहाँ मात और न्याय की समझ के साथ, इसलिए न्याय से डरने या अराजकता में योगदान देने के बजाय, मेसोपोटामिया की प्रार्थनाएँ अज्ञानता की दलील देती थीं क्योंकि वे वास्तव में नहीं जानते थे कि उन्होंने विभिन्न देवताओं को नाराज़ करने के लिए क्या किया था। इतने सारे देवता हैं।

उन्हें यकीन नहीं है कि उन्होंने वास्तव में किसका अपमान किया है। इसलिए यह इस बात की अज्ञानता है कि जो एक ईश्वर के लिए अपमानजनक हो सकता है, वह दूसरे ईश्वर के लिए अपमानजनक नहीं हो सकता। और इसलिए वे वास्तव में यह नहीं जानते कि वास्तव में क्या हुआ या उन्होंने ऐसा क्या किया कि इस तरह की आपदा उनके सामने आई।

और इसलिए, यहाँ, शायद अज्ञानता का दावा बाइबल में मौजूद नहीं है क्योंकि इज़राइल का दृष्टिकोण एक बहुदेववादी विश्वदृष्टि नहीं है। और इसलिए जब आपके पास इतने सारे देवता होते हैं, तो उन पापों का हिसाब रखना मुश्किल होता है, जो अलग-अलग देवताओं को उस तरह से नाराज़ कर सकते थे। और इसलिए यहाँ एक और अंतर यह है कि मध्यस्थों की भूमिका है।

और इसलिए यहाँ इन मेसोपोटामिया की प्रार्थनाओं में, आपके पास वास्तव में ऐसे लोग हैं जिनके पास मध्यस्थ हैं जो इस तरह से आपके मामले पर बहस करने के लिए आपकी जगह पर खड़े होने जा रहे हैं। और इसलिए, यह इस बहुदेववादी विश्वदृष्टि से उपजा है कि एक भगवान वास्तव में दूसरे देवताओं से प्रार्थना करने वाले व्यक्ति के लिए मध्यस्थता कर सकता है। इसलिए लोगों के पास अपने निजी देवता या स्थानीय देवता होंगे जो वास्तव में आकर अधिक, आप जानते हैं, किसी उच्च पद या पदानुक्रम में किसी व्यक्ति के लिए मध्यस्थता कर सकते हैं और इस तरह से उनके लिए मध्यस्थता कर सकते हैं।

और इसलिए, वे इस तरह से प्रार्थना करने वाले व्यक्ति की ओर से एक देवता के रूप में आते हैं। और इसलिए इस तरह से मध्यस्थ होते हैं। और इसलिए यहाँ, एक सामान्य विशेषता यह है कि याचिकाकर्ता की ओर से एक देवता का दूसरे देवता के समक्ष मध्यस्थता करना।

इसलिए अक्सर ऐसा नहीं होता कि पीड़ित व्यक्ति अपने निजी ईश्वर से प्रार्थना करता है कि वह उसके लिए उच्च देवताओं के समक्ष हस्तक्षेप करे या इसके विपरीत भी। तो, वास्तव में आपके पास उस तरह की मुलाकात होती है। वे सीधे उच्च देवता के पास नहीं आ सकते।

उन्हें वास्तव में अपने व्यक्तिगत ईश्वर के माध्यम से आने की आवश्यकता है। और इसलिए यहाँ, यह पदानुक्रम मौजूद था और व्यक्तियों का इस अर्थ में परम उच्च ईश्वर के साथ व्यक्तिगत संबंध होना आवश्यक नहीं था। और इसलिए यहाँ, इसने किसी भी व्यक्तिगत ईश्वर को पूर्ण संप्रभुता से वंचित कर दिया।

लेकिन यह दिलचस्प है क्योंकि फिर भी, उच्च-स्तर के देवताओं की अक्सर इस तरह प्रशंसा की जाती थी जैसे कि वे पूरी तरह से संप्रभु हों। इसलिए यह दिलचस्प है कि इन तरह के ग्रंथों में भी उन्हें कैसे संबोधित किया जाता है। और इसलिए यहाँ, ये कुछ समानताएँ और अंतर हैं जो हम यहाँ पाते हैं।

और इसलिए यहाँ मेसोपोटामिया में, सुमेरियन शहर विलाप नामक एक अलग शैली भी है। और इसलिए, मैंने अभी जिन प्रार्थनाओं पर चर्चा की है, उनमें से बहुत सी प्रार्थनाएँ अधिक व्यक्तिगत प्रार्थनाएँ मानी जाती हैं, आप जानते हैं, देवता से प्रार्थना। और यह श्रेणी वास्तव में एक अलग प्रकार की शैली है जो कुछ मायनों में अधिक कॉर्पोरेट है, या एक तरह का शहर विलाप है जिसे हम इस तरह से देखते हैं।

तो, इन प्रार्थनाओं में शहरों के पतन पर शोक व्यक्त किया गया और इन घटनाओं के महत्व पर विचार किया गया जो घटित हुई थीं। तो, पतन किस वजह से हुआ, आप जानते हैं, शहर का पुनर्निर्माण और इस तरह की चीजें। इसलिए भले ही वे भजनों में सामुदायिक विलाप शैली से अलग हैं, लेकिन वे विलाप की पुस्तक पर हमारी समझ को सूचित कर सकते हैं।

तो, जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया था, विलाप की पुस्तक वास्तव में यरूशलेम शहर के विनाश पर शोक व्यक्त करती है। और इसलिए, आपके पास सुमेरियन शहर विलाप के संदर्भ में कुछ पूर्ववर्ती हैं, आप जानते हैं, क्या यह वास्तव में विलाप की पुस्तक को सूचित करता है? आप जानते हैं, क्या हम इसे देख सकते हैं? इसलिए विद्वानों ने मेसोपोटामिया में पाँच सुमेरियन शहर विलाप पाए हैं। तो ये पाँच हैं जो उर के विनाश पर विलाप करते हैं, ये पाँच हैं जो शायद सबसे प्रसिद्ध हैं जब हम सुमेरियन शहर विलाप की शैली के बारे में सोचते हैं और वे किस तरह से चर्चा की जाती हैं।

और इसलिए यहाँ ये विलाप सुमेर में विभिन्न शहरों के विनाश के जवाब में लिखे गए थे। तो आप यहाँ इनकी विषय-वस्तु और रूप को अलग-अलग पा सकते हैं, लेकिन उनके विषय भी साझा थे। तो, फिर से, जैसा कि हम किसी भी तरह की शैली में देखते हैं, उनके पास इस तरह से कुछ साझा विषय हैं।

तो उन सभी ने निम्नलिखित में से एक या अधिक द्वारा शहर और मंदिर के विनाश की बात की। तो आपके पास वास्तव में एक विनाशकारी प्रकार की घटना है जो घटित हुई, चाहे वह सैन्य हमले या प्लेग या सूखा या अकाल हो, और निवासियों के नुकसान, शहर को नष्ट करने के भगवान के फैसले, शहर के रक्षक भगवान के त्याग के बारे में भी बात की। तो यहाँ भगवान वास्तव में शहर छोड़ रहे हैं, साथ ही शहर और मंदिर की बहाली, और रक्षक भगवान की वापसी।

तो आपके पास यह पूरी प्रक्रिया है जिसका यहाँ उल्लेख किया गया है या जिसके बारे में यहाँ बात की गई है। और इसलिए कुछ विद्वानों का सुझाव है कि इन शहर विलापों को तब गाया या इस्तेमाल किया गया जब उन्होंने शहरों का पुनर्निर्माण किया। इसलिए विनाश के बाद और उनका पुनर्निर्माण किया गया और उनके मंदिर को बहाल किया गया, वे वास्तव में इन समयों पर इस तरह से इनका पाठ करते थे।

इसी तरह, बाद में एक रूप था। इस तरह के सुमेरियन शहर विलापों के विकास के कारण, उनके पास वास्तव में बैलेग और उर्शिमा नामक विभिन्न श्रेणियां थीं। और ये मूल शहर विलापों से व्युत्पन्न थे।

लेकिन वास्तव में इनमें थोड़ी अधिक अस्पष्टता थी। वे प्रकृति में अधिक सामान्य हो गए। इसलिए, उन्हें इस तरह से अधिक आसानी से अनुकूलित करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

और इसलिए इनका उपयोग तब किया जाता था जब किसी अभयारण्य को ऊपर उठाया और बहाल किया जाना था, और मंदिर की बहाली और पुनर्निर्माण प्राचीन निकट पूर्व शासकों का एक प्रमुख शगल था। लेकिन इनका उपयोग इस तरह से अकीतु प्रकार के त्यौहारों के दौरान भी

किया जाता है। और इसलिए यहाँ आप देख सकते हैं कि ये लगभग उसी समय के आसपास थे, लेकिन वे प्रकृति में अधिक सामान्य भी हैं।

और इसलिए उनके पूर्ववर्ती इस मामले में ज़्यादा विशिष्ट थे। इससे उन्हें इसे अलग-अलग स्थितियों में थोड़ा बेहतर ढंग से ढालने में मदद मिलती है। तो, आप यहाँ जो पाते हैं वह यह है कि जबकि विद्वानों की राय अलग-अलग है, आप जानते हैं, कई लोग मानते हैं कि विलाप की पुस्तक में कुछ ऐसी बातें प्रतिबिंबित होती हैं जो आपको इन सुमेरियन शहर के विलापों में भी मिलती हैं।

और इसलिए यहाँ, मैं जो बात बताना चाहता हूँ, वह यह है कि, सामान्य तौर पर, जैसा कि हम तुलना के बारे में सोच रहे हैं, आप जानते हैं, इज़राइल के प्राचीन निकट पूर्वी पड़ोसी और विभिन्न प्रकार के रूप और पाठ और प्रार्थनाएँ और चीज़ें जो हमें यहाँ मिलती हैं, आप जानते हैं, यहाँ विलाप की पुस्तक और सुमेरियन शहर के विलाप के बारे में सोचना। तो यह दिखाना है कि साहित्य शून्य में उत्पन्न नहीं होता है। इसलिए जब हम बाइबिल के विलापों को देख रहे हैं और उसके बारे में सोच रहे हैं, तो यह शून्य से उत्पन्न नहीं होता है।

उनके पास पड़ोसियों का एक संदर्भ है। उनके पास एक संदर्भ है जिसमें ये रूप यहाँ सामने आ रहे हैं। और इसलिए पहले, आप जानते हैं, प्रासंगिक प्रभाव और पिछले प्रोटोटाइप का उपयोग बाद के कार्यों को आकार देने के लिए किया जा सकता है।

और इसलिए यहाँ हम कुछ समानताएँ और बाइबिल के उदाहरण देख सकते हैं। हम वहाँ बहुत सारे अंतर भी देख सकते हैं। और इसलिए इन प्रभावों को पिछले कार्यों की धार्मिक या दार्शनिक समझ को प्रतिबिंबित करने की आवश्यकता नहीं है, भले ही समानताएँ मौजूद हों, और अंतर शिक्षाप्रद और ज्ञानवर्धक हो सकते हैं।

और इसलिए मुझे लगता है कि जैसा कि आप इसे देख सकते हैं, यहां तक कि विलाप की पुस्तक और फिर उन सभी के लिए जिन्हें हमने अभी जांचा है, हम यह भी देख सकते हैं कि यह हमारे लिए शिक्षाप्रद हो सकता है क्योंकि हम बाइबिल के विलाप के बारे में सोचते हैं और यह कैसे अलग है, हम कैसे सीख सकते हैं? और यह वह जगह है जहाँ, आप जानते हैं, यह अंतिम भाग बात कर रहा है, आप जानते हैं, यहाँ कुछ उदाहरणों के माध्यम से बहुत ही संक्षिप्त तरीके से चलने के बाद, हम समानताओं और अंतरों से कैसे सीख सकते हैं? इसलिए जब हम इस्राएल के पड़ोसियों की प्रार्थनाओं को देख रहे हैं, तो यह हमारी कैसे मदद करता है जब हम बाइबिल के विलाप को पुनः प्राप्त करना चाहते हैं जब हम बाइबिल के बारे में सोचते हैं कि आप जानते हैं, बाइबिल के विलाप के बारे में क्या अलग है और पुराने नियम में विलाप शैली अपने समय की संस्कृति को कैसे दर्शाती है और वे कैसे भिन्न हैं? और इसलिए हम इसमें क्या पाते हैं? यह कैसे शिक्षाप्रद हो सकता है, और हम इन उदाहरणों में जो पाते हैं, उसमें इन अंतरों से कैसे संदर्भ ले सकते हैं और सीख सकते हैं? और इसलिए मैं सबसे पहले संक्षेप में बात करना चाहता हूँ, आप जानते हैं, यहाँ उन सभी विभिन्न प्रकारों को देखते हुए, आप जानते हैं, कुछ समानताएँ क्या हैं? कुछ अंतर क्या हैं? हम वास्तव में इनसे क्या सीख सकते हैं, और इससे क्या हो सकता है? और इसलिए, यहाँ एक बात है जो समान है: जैसे उनके पड़ोसियों ने कठिन समय के दौरान देवताओं से प्रार्थना की, और उनके पास, आप जानते हैं, समान तत्व, शब्दावली और विषय थे, आप पा

सकते हैं कि इज़राइल भी ऐसा ही कर रहा है। इसलिए, मुझे लगता है कि यह दुख की सार्वभौमिक प्रकृति, हमारे जीवन में ऐसी स्थितियों की सार्वभौमिक प्रकृति को दर्शाता है, जिसमें हमें मदद और प्रार्थना की आवश्यकता होती है। और इसलिए यहाँ हम पा सकते हैं कि कठिन समय के दौरान इस तरह के देवता आते हैं।

उनका विश्व दृष्टिकोण भौतिक दुनिया से परे था। और इसलिए, आप जानते हैं, उनके लिए सिर्फ़ भौतिक दुनिया ही अस्तित्व में नहीं थी। उन्होंने पहचाना कि भौतिक दुनिया से परे भी कुछ है और इस तरह वे देवताओं से पहले आने का संकेत देते हैं।

उनका मानना है कि देवता ही न्याय को कायम रखते हैं और प्रतिशोध, उपचार और राहत लाते हैं। और इसलिए यहाँ इस बात को स्वीकार किया जाता है कि यह, आप जानते हैं, उनके बाहर से, आध्यात्मिक क्षेत्र से भी आता है और देवताओं से आता है जिन्होंने न्याय को कायम रखा और उनके पास, आप जानते हैं, उस अर्थ में उस तरह की शक्ति थी। वे दिव्य प्राणियों के अस्तित्व और प्रार्थना करने वाले व्यक्ति की सहायता करने की उनकी क्षमता में विश्वास करते थे।

और इसलिए यहाँ दिव्य दुनिया और, आप जानते हैं, भौतिक दुनिया और प्रार्थना करने वाले व्यक्ति के साथ जुड़ाव है। और इसलिए यह केवल एक देवता नहीं था जो बहुत दूर था, बल्कि वे वास्तव में यहाँ जुड़ सकते थे। और उन्होंने यह भी देखा कि दिव्य प्राणी मनुष्यों की तुलना में क्षमता में अधिक हैं।

इसलिए, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि देवताओं की उनके चरित्र और सृष्टि के निर्माण और पालन-पोषण में प्रदर्शित सामान्य कार्यों के लिए व्यापक रूप से प्रशंसा की गई। और इसलिए यहाँ यह स्वीकार किया गया है कि, आप जानते हैं, मनुष्य अपनी शक्ति में सीमित हैं और हमें उस अर्थ में किसी उच्चतर या अधिक अधिकार वाले व्यक्ति के पास जाने की आवश्यकता है। और इसलिए इस तरह की समानताएँ होने के कारण यहाँ देवता और देवताओं के पास भी उसी अर्थ में जाया जा रहा है।

तो फिर, जब हम यहाँ मतभेदों के बारे में सोचते हैं, तो आप जानते हैं, कुछ बुनियादी धार्मिक मतभेद हैं, जिन्हें निम्नलिखित दो मुख्य श्रेणियों में संक्षेपित किया जा सकता है। तो इस बारे में सोचते हुए कि दो मुख्य श्रेणियाँ हैं जिन्हें मैं इन मतभेदों को वर्गीकृत करूँगा। और यहाँ पहली बात यह होगी कि वे मनुष्य और ईश्वर के बीच के रिश्ते को कैसे देखते थे।

तो, यहाँ, अधिक विशेष रूप से, मनुष्य और ईश्वर के बीच संबंधों को कैसे देखा गया? हालाँकि वे जानते थे कि, आप जानते हैं, मनुष्य अपनी शक्ति में सीमित थे, और देवता अधिक शक्तिशाली थे। आप जानते हैं, जिस तरह से उन्होंने संबंध देखा और जिस तरह से उन्होंने बातचीत की, उसकी विशेषता क्या थी? तो यहाँ पहला, आप जानते हैं, निश्चित रूप से यह बहुदेववादी बनाम एकेश्वरवादी प्रकार का विश्वदृष्टिकोण है और वे इसे कैसे देखते हैं। और इसलिए, यहाँ इस बहुदेववादी विश्वदृष्टिकोण ने सभी देवताओं के साथ उस व्यक्तिगत बातचीत को मुश्किल बना दिया।

तो, प्रार्थनाएँ अंतरंग संबंध को नहीं दर्शाती हैं। तो यह कुछ ऐसा है जो यहाँ बहुत स्पष्ट है, क्योंकि जब आपके पास इतने सारे देवता होते हैं, तो आप जानते हैं, उन सभी के साथ उस तरह से अंतरंग होना मुश्किल है। और आप यह देखकर बहुत खुश हुए कि यह जरूरी नहीं है कि यह कैसे परिलक्षित होता है और कैसे, जब वे उस तक पहुँचते हैं, तो यह एक अंतरंग संबंध था, जो कि बाइबल से बहुत अलग है।

और इस तरह के अर्थ में, इसने पाप के बारे में उनके दृष्टिकोण को भी आकार दिया। और इसलिए, चाहे वह पाप की अज्ञानता थी, विशेष रूप से मिस्त्रियों की तरह की समझ के साथ कि वे अराजकता में भाग नहीं लेना चाहते थे और योगदान नहीं देना चाहते थे, या यह कि विभिन्न देवताओं को भड़काने या नाराज़ करने के लिए उन्होंने क्या किया था, इसका हिसाब रखना मुश्किल था। तो यहाँ इसने आकार दिया कि वे पाप को कैसे देखते थे और उन्होंने क्या गलत किया, या वे किस तरह से अपने देवताओं से संपर्क करते हैं, और कैसे वे उनसे विनती करते हैं।

इसलिए इसके लिए देवताओं से देवताओं के लिए या प्रार्थना करने वाले व्यक्ति के लिए मध्यस्थता की आवश्यकता थी। इसलिए उन्हें एक अनुग्रह प्राप्त करने में मदद करने के लिए, क्योंकि वहाँ एक पदानुक्रम था जो अस्तित्व में था। इसलिए यहाँ वे इसे अकेले नहीं कर सकते थे।

उन्हें अन्य देवताओं की सहायता लेनी पड़ी, उनके निजी देवताओं की, लोगों की जो इस मामले में मध्यस्थ के रूप में आए। अपने निजी ईश्वर के साथ सामंजस्य बिठाना ही पर्याप्त नहीं है। उन्हें समग्र कल्याण सुनिश्चित करने के लिए देवताओं की सहायता की आवश्यकता थी।

इसलिए उन्हें, आप जानते हैं, अपने जाल को व्यापक रूप से फैलाने की ज़रूरत थी, यह सुनिश्चित करने की कि सब कुछ ठीक होने वाला है। और इसलिए यहाँ उनकी समझ ने दिव्य के पास पहुँचने पर दूरी की भावना में योगदान दिया। इसलिए, उन्हें अपना परिचय देने और उपहार या भेंट के साथ आने की ज़रूरत थी।

और इसलिए यहाँ यह बहुत औपचारिक हो सकता है। उन्हें वास्तव में उच्च देवताओं के सामने खुद को पेश करना पड़ता है। उन्हें वास्तव में इसे अधिक लेन-देन के रूप में देखना पड़ता है, आप जानते हैं, यहाँ बलिदान और भेंट या उपहार लाना पड़ता है ताकि उनका अनुरोध सुना जा सके।

उन्होंने सकारात्मक प्रतिक्रिया सुनिश्चित करने के लिए बहुत व्यापक प्रशंसा के साथ अपनी बातचीत शुरू की। इसलिए उन्हें देवताओं को सुनने और उनके अनुरोध का जवाब देने के लिए तैयार होने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना पड़ा। एक और अंतर यह है कि, आप जानते हैं, ईश्वर के साथ एक अधिक दूर का रिश्ता है, जिसमें आपके पास बहुत अधिक धन्यवाद प्रार्थनाएँ नहीं हैं, कोई भी व्यक्तिगत उत्तर नहीं है जिसके बारे में वे यहाँ बात कर रहे हैं और घोषणा कर रहे हैं, आप जानते हैं, भगवान ने व्यक्ति के लिए क्या किया है।

यह देवताओं द्वारा व्यक्ति के लिए किए गए कार्यों की मान्यता से कहीं अधिक सामान्य प्रकृति की प्रशंसा है। और फिर यहाँ उनकी प्रार्थनाएँ उनके देवताओं के पौराणिक तत्वों पर जोर देती हैं। इसलिए, एक तरह से, फिर से, देवताओं और मानव दुनिया के बीच अधिक दूरी को दर्शाता है।

और इसलिए यहाँ उस अर्थ में भी अधिक दूरी है। तो, यहाँ, सोचने वाली दूसरी बात यह है कि वे देवताओं और मनुष्यों के बीच के रिश्ते को कैसे देखते हैं। तो, यह वह जगह है जहाँ पुराना नियम इस बहुदेववादी विश्वदृष्टि को प्रस्तुत नहीं करता है।

और इसलिए, यहोवा ही एकमात्र ईश्वर है। इसलिए वह दुनिया का निर्माता और पालनहार है। इसलिए, वे नहीं करते, भजन संहिता में ऐसा कोई ईश्वर नहीं दिखाया गया है जिसे हटा दिया गया हो।

और इसलिए यहाँ हम दिखाते हैं कि परमेश्वर वास्तव में, आप जानते हैं, बहुत अंतरंग है। तो, यहाँ तक कि भजन 2710 में भी, भजनकार पूरे विश्वास के साथ घोषणा करता है कि भले ही उसके अपने माता-पिता ने उसे त्याग दिया हो, वह जानता है कि प्रभु फिर भी उसकी देखभाल करेगा। मेरा मतलब है, अंतरंगता इतनी अलग है, इतनी स्पष्ट है कि हम यहाँ अन्य प्रार्थनाओं में जिस तरह की प्रार्थनाएँ देखते हैं, उनसे अलग है।

और इसलिए यहोवा के पास आने के लिए किसी औपचारिक परिचय की आवश्यकता नहीं है। भजन 139 में कहा गया है कि वह भजनकार को उसके जन्म से पहले ही अच्छी तरह से जानता था। और इसलिए यहाँ एक वास्तविक अंतरंगता की भावना है जिसे भजनकार जानता है, और जानता है कि यहोवा के साथ उसका इस तरह का रिश्ता है।

इस्राएल के पास भी यह विशेष वाचा सम्बन्ध था। और इसलिए वह वास्तव में बिना किसी दिखावे के, यहाँ आकर अपनी विनती कर सकता है। और इसलिए उसे परमेश्वर की बहुत प्रशंसा करने की आवश्यकता नहीं है।

तो, आप इन विलाप की प्रार्थनाओं में पहले से कोई व्यापक प्रशंसा नहीं देखते हैं। यह आमतौर पर ईश्वर को सीधे संबोधित करते हुए ईश्वर को पुकारने या पुकारने जैसा होता है और फिर उसी तरह से अनुरोध और विलाप में चला जाता है। तो यहाँ सीधे विलाप और अनुरोध की ओर भी जाया जा सकता है।

वे किसी तीसरे पक्ष की मदद के बिना भी आ सकते हैं। इन प्रार्थनाओं के मामले में आपके पास कोई मध्यस्थ नहीं है। आप जानते हैं, एक ईश्वर ही उसके लिए प्रार्थना कर रहा है।

विलाप की इन प्रार्थनाओं में आपको इस तरह का उदाहरण नहीं मिलता। उन्हें बिना पाप के या बिना अपना सर्वश्रेष्ठ व्यवहार किए आने की ज़रूरत नहीं थी। इसलिए, इसके बजाय, भजनकार ने अक्सर अपने दर्द और संकट को व्यक्त किया और फिर खुलकर अपराध और निर्दोषता को स्वीकार किया।

और इसलिए, उन्हें अपने पूर्ववर्तियों से खुद को अलग करने की ज़रूरत नहीं पड़ी ताकि वे अपने पापों से मुक्त हो सकें। लेकिन वे अपने पापों से खुद को जोड़ पाए। वे अपने इरादों में ईमानदार थे, भले ही वे उससे पहले आए थे।

और इसलिए मुझे लगता है कि यहाँ यह और भी आश्चर्यजनक है, आप जानते हैं, नए नियम के विश्वासियों के रूप में, हम परमेश्वर के लोगों के रूप में और भी अधिक संगति का अनुभव कर सकते हैं क्योंकि पवित्र आत्मा वास्तव में हमारे अंदर रहता है, जैसा कि 2 कुरिन्थियों में कहा गया है। तो यह हमें विश्वास के साथ परमेश्वर के सामने आने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। इसलिए जब हम विलाप की प्रार्थनाओं और यहाँ तक कि यहाँ अपने लिए विलाप करने के बारे में सोचते हैं, तो आप जानते हैं, क्रूस पर किए गए संकट ने हमें अनुग्रह के सिंहासन तक पहुँच प्रदान की है।

और इसलिए यहाँ, जब हम विलाप की इन प्रार्थनाओं को प्रार्थना करने के तरीके के रूप में देखते हैं, तो हम वास्तव में अधिक आत्मविश्वास और समझ प्राप्त कर सकते हैं कि यह हमारे लिए आधारभूत है। और हम बाइबल के विलाप को पुनः प्राप्त करने के बारे में सोच रहे हैं, कि यह शास्त्र में पाए जाने वाले विलाप की शैली में निहित है, कि हम वास्तव में, नए नियम के विश्वासियों के रूप में, आत्मविश्वास के साथ आ सकते हैं और इस अंतरंगता को पहचान सकते हैं जो हम परमेश्वर के साथ भी रख सकते हैं। और इसलिए, पुराने नियम में लगातार परमेश्वर द्वारा अपने लोगों की पुकार सुनने और उन्हें मुक्ति दिलाने की बात कही गई है।

हम इसे निर्गमन में पाते हैं। और इसलिए यहाँ, घोषणात्मक प्रशंसा या धन्यवाद की शैली आमतौर पर व्यक्तिगत विलाप से जुड़ी हुई थी। इसलिए यहाँ, यह कुछ बहुत अलग है।

तो वास्तव में, आप जानते हैं, हरमन गुंकल के साथ, भजनों में चार अलग-अलग प्रकार की शैलियों की पहचान की गई है। उनमें से एक है धन्यवाद भजन, और वे आम तौर पर विलाप और व्यक्तिगत विलाप से जुड़े होते हैं। और इसलिए यहाँ व्यक्तिगत प्रार्थनाओं के लिए भगवान की प्रतिक्रिया और उनके उत्तर हैं।

और इसलिए घोषणात्मक प्रशंसा परमेश्वर की कार्रवाई और हस्तक्षेप का परिणाम है, जो घोषणात्मक प्रशंसा का स्रोत है। और इसलिए, यहाँ यह दिलचस्प है। फिर से, यह तथ्य कि बाइबल में घोषणात्मक प्रशंसा मौजूद है, इस बात का प्रमाण है कि विलाप की प्रार्थनाएँ अनसुनी नहीं होती हैं।

और मुझे लगता है कि यह हमारे लिए महत्वपूर्ण है। आप जानते हैं, हम भगवान से प्रार्थना नहीं कर रहे हैं कि हम उम्मीद करें कि वह हमारी प्रार्थना सुनेंगे। हम यहोवा, हमारे स्वर्गीय पिता से प्रार्थना कर रहे हैं।

और वही एकमात्र है जो उत्तर देने में सक्षम है। और वह उत्तर देता भी है। और इसलिए हम पाते हैं कि भजन संहिता में भी वह उत्तर देता है।

और इसलिए जैसे उसने भजनकार को उत्तर दिया, वैसे ही वह हमें भी उत्तर दे सकता है। और हम अपनी प्रार्थनाएँ आध्यात्मिक क्षेत्र के इस रसातल में या ब्रह्मांड में बिना किसी तरह के आश्वासन के नहीं डाल रहे हैं। हम वास्तव में इस तरह से यहाँ धर्मशास्त्रीय उदाहरण पाते हैं।

और इसलिए हम अपने दुख में अकेले नहीं हैं। और यह कि नए नियम के विश्वासियों के रूप में भी, यीशु हमारे लिए मध्यस्थता करते हैं और हमें याद दिलाते हैं कि, आप जानते हैं, जिसने अपने

बेटे को नहीं छोड़ा, बल्कि उसे हमारे लिए दे दिया। मैं दिखाऊंगा कि कैसे हम भी, उसके साथ, कृपापूर्वक हमें सब कुछ दे सकते हैं ताकि हम विलाप करते हुए भी आत्मविश्वास रख सकें।

तो दूसरा तरीका जो यहाँ धार्मिक रूप से मतभेदों के संदर्भ में है, आप जानते हैं, प्रार्थनाएँ कैसे काम करती हैं। और इसलिए यहाँ, जैसा कि आपने पढ़ा है, कई प्रार्थनाएँ लेन-देन संबंधी थीं। इसलिए हिंदी लोग परमेश्वर के सामने आकर कारण और तर्क देते थे कि क्यों परमेश्वर को पाप और पीड़ा को क्षमा करने या समाप्त करने के लिए राजी किया जाना चाहिए।

उनका ज़ोर दया या माफ़ी मांगने पर नहीं था। और इसलिए यह उस अर्थ में बहुत अलग है। यही कारण है कि हम अक्सर अपनी कंपनी से याचिकाकर्ता द्वारा लाए गए और प्रतिज्ञा किए गए बलिदान और भेंटों से भी जुड़े होते हैं।

और फिर आप इन सुमेरियन बेबीलोनियन प्रार्थनाओं को भी देखते हैं, उन्हें मंत्र माना जाता है, इसलिए अनुष्ठान और उपहार और ऐसी चीजें जो उन्हें करने की ज़रूरत थी। और इसलिए वे सकारात्मक परिणाम सुनिश्चित करने के लिए ये सब कर रहे थे। इसलिए उत्तर इस बात पर निर्भर थे कि वे इन अनुष्ठानों को सही तरीके से करें, सही उपहार लाएँ, और यहाँ सही काम करें।

और फिर इन अनुष्ठानों में अक्सर ऐसे मंत्र शामिल होते थे जो लेन-देन की मानसिकता को मजबूत करते थे। तो, जैसा कि आप सोचते हैं, यह एक बहुत ही लेन-देन की मानसिकता है। इसलिए पूर्ण समर्पण और भेद्यता के साथ आने की तुलना में दिव्य के पास पहुँचने पर चरण-दर-चरण प्रक्रिया शायद आसान और सुरक्षित थी।

तो यहाँ यह वास्तव में अलग है। जब आप इस बारे में सोचते हैं, यहाँ इस तरह की मानसिकता और प्रार्थनाएँ कैसे काम करती हैं, तो आप जानते हैं, जैसे कि जब हम आते हैं, तो ऐसा नहीं होता कि हमें यह और यह और यह करना है और यह सुनिश्चित करना है कि हम इसे सही तरीके से करें ताकि हमें सही परिणाम मिले। यह वास्तव में वही है जो आपको यहाँ भजन संहिता की पुस्तक में मिलता है।

और फिर विलाप सिर्फ़ भजनों में अपने दिल की बात कहने वाले लोग हैं, जो कमज़ोरी में आते हैं। यह लेन-देन की मानसिकता के साथ आने से बहुत अलग है और आप इस तरह से चीज़ों को कैसे देख सकते हैं। और इसलिए यहाँ, जबकि भजनों में समान शब्दावली है, पुराने नियम में यहाँ अलग है जहाँ यह कहा गया है, आप जानते हैं, यहोवा ने धार्मिकता और न्याय को बलिदानों से ज़्यादा महत्वपूर्ण माना।

और यहीं पर आप पाते हैं कि सही और न्यायपूर्ण कार्य करना, बलिदान से ज़्यादा प्रभु को स्वीकार्य है। और इसलिए यहाँ, दूसरे शब्दों में, यहोवा को केवल बलिदान या भेंट के द्वारा कार्य करने के लिए राजी नहीं किया गया है। और इसलिए भजनकार स्तुति की प्रतिज्ञाएँ करता है, जैसा कि हम देख सकते हैं, लेकिन वे मंत्रों के रूप में कार्य नहीं करते हैं।

यह एक ही बात नहीं है। इसलिए, प्रशंसा बलिदान का विकल्प नहीं है। प्रतिज्ञा सकारात्मक परिणाम सुनिश्चित करने के लिए नहीं दी जाती है।

इसके बजाय, यह विलाप और प्रार्थना से प्रशंसा की ओर संक्रमण का हिस्सा था। और इसलिए, यह महत्वपूर्ण है क्योंकि जब हम बाइबिल के विलाप और बाइबिल के विलाप को पुनः प्राप्त करने के बारे में सोचते हैं, तो यह पुष्ट होता है कि बाइबिल का विलाप एक प्रक्रिया है। इसलिए, यह केवल इस तरह से नहीं है कि आप लेन-देन के साथ आ रहे हैं।

यह कोई सूत्र नहीं है। यह कोई मंत्र नहीं है। जब हम परमेश्वर के सामने विलाप करते हैं, तो हम वास्तव में उसका इंतज़ार कर रहे होते हैं।

हम इस तरह से परमेश्वर के सामने आ रहे हैं। इसलिए, जब हम अपना दर्द और अपनी निराशाएँ, दर्द और शर्म और पीड़ा को उंडेलते हैं, तो हम किसी लेन-देन की रस्म में शामिल नहीं होते। हम यहोवा के सामने आ रहे हैं, जो हमारे स्वर्गीय पिता हैं।

हम अपने गहरे विचारों, इच्छाओं और आशाओं को साझा कर रहे हैं। यह इस प्रक्रिया में है कि भजनकार अक्सर एक नया दृष्टिकोण और एक नई उम्मीद पाता है जो अधिक आशा की ओर ले जाती है। जिस तरह अय्यूब और हबक्कूक को परमेश्वर के साथ उनकी मुलाकात के माध्यम से एक नया दृष्टिकोण दिया गया था, विलाप के कई भजन भी इस परिवर्तन को प्रदर्शित करते हैं।

और इसलिए, बाइबिल के विलाप की प्रार्थनाएँ कोई जादू-टोना नहीं हैं, और वे सिर्फ सौदेबाज़ी या परमेश्वर को कार्रवाई के लिए मजबूर करने के लिए नहीं हैं। इसके बजाय, वे परमेश्वर को पूर्ण समर्पण और भेद्यता में शामिल कर रहे हैं। और इसलिए, मुझे लगता है कि यह कुछ ऐसा है जिसे हमें वास्तव में दिल से लेने की ज़रूरत है जब हम बाइबिल के विलाप को पुनः प्राप्त करने के बारे में सोचते हैं, और हम प्रार्थना के बारे में सोचते हैं और हम कैसे परमेश्वर को शामिल कर रहे हैं।

और इसलिए, मैं यहाँ कुछ चिंतन प्रश्नों के साथ अपना समय समाप्त करना चाहता हूँ, आप जानते हैं। तो, इस्राएल के पड़ोसियों की प्रार्थनाओं के बारे में एक संक्षिप्त चर्चा के बाद, वे हमें बाइबल के विलाप की अनूठी प्रकृति को देखने में कैसे मदद करते हैं, आप जानते हैं, उस संदर्भ से उत्पन्न होने वाली तरह की? बाइबल में जो कुछ भी हमें मिलता है, उसमें क्या अनोखा है? और मुझे लगता है कि ऐसी बहुत सी चीज़ें हैं जिनके लिए हम आभारी हो सकते हैं और जिनके लिए हम आभारी हो सकते हैं। और इसलिए, पुराने नियम के परमेश्वर के दृष्टिकोण और उसके पड़ोसियों के दृष्टिकोण के बीच कुछ सामान्य धार्मिक अंतर क्या हैं? और ये अंतर उनकी प्रार्थनाओं को कैसे प्रभावित करते हैं? और इसलिए यहाँ इस बारे में सोचें कि वे परमेश्वर से कैसे संपर्क करते हैं, उन्होंने इस तरह से कैसे प्रार्थना की, और कुछ विशिष्ट अंतर क्या थे, और कौन से अंतर आपको सबसे ज़्यादा पसंद आए? और ये अंतर आपको बाइबल के विलाप और शास्त्र में जो कुछ भी मिलता है, उसकी सराहना करने में कैसे मदद करते हैं? तो, धन्यवाद।

यह डॉ. मे यंग द्वारा इजरायल के प्राचीन निकट पूर्वी पड़ोसियों के विलापों की तुलना पर सत्र 2 में दिया गया व्याख्यान है।